Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II (H)
Paper-III
Date:-
DO-Next-class

Models of Psychology

Existential Models

अस्तित्ववादी प्रतिमाण

विक्टर फ्रैंक्ल (Victor-Frankl) जो फ्रायड के शिष्य थे, ने असामान्यता की व्याख्या करने में एक विशेष आयाम, जिसे आध्यात्मिक जिंदगी (Spiritual Life) कहा है, काफी महत्वपूर्ण माना है। फ्रैंकल के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार का सबसे प्रमुख अभिप्रेरक न तो आनंद-की-इच्छा (will-to-~~meaning~~ Pleasure) है ~~अर्थ की इच्छा से तात्पर्य अपने कुंठित, अतीत~~ और नही शक्ति-की-ईच्छा (will-to-power) है। बल्कि अर्थ-की-इच्छा (will-to-meaning) है। अर्थ-की-इच्छा से तात्पर्य अपने कुंठित, अतीत एवं सीमित अस्तित्व के लिए उचित कारण ~~से ढूंढना~~ को ढूंढने से होता है। व्यक्ति इस ढंग का अर्थ को तभी समझ पाता है जब उसे मूल्य (value) का अनुभव हुआ हो। व्यक्ति से मूल्य का विकास अपने कार्यों से, अन्य लोगों से स्नेह एवं प्यार से तथा तकलीफ या दुखों ~~के~~ का सामना करने से होता है। जब व्यक्ति के इस मूल्य-अर्जन-प्रक्रिया (value of acquiring Process) में रूकावट होता है, तो इससे व्यक्ति में असामान्यता विकसीत होती है। असामान्यता के उपचार के लिए फ्रैंकल (Frankl) ने जिस विधि का प्रतिपादन किया है, उसे लोगो-चिकित्सा (Logotherapy) कहा जाता है जिसमें चिकित्सक रोगी को उसके अस्तित्व के उत्तरदायित्व से सामना कराता है तथा उसे विभिन्न

P.T.O

मूल्यों (values) में से सही मूल्य को चुनने के लिए प्रोत्साहित करना है। इससे धीरे-धीरे रोगी अपने अस्तित्व के सही अर्थ को समझने लगता है तथा उसकी समस्या की गंभीरता कमने लगती है।

आर॰ डी॰ लायिंग (R.D. Laing) जो एक ब्रिटिश मनश्चिकित्सक (British Psychiatrist) है, के अनुसार व्यक्ति के अस्तित्व का महत्वपूर्ण तथ्य उसके व्यक्तिगत सम्बन्ध (Personal Relationship) में होता है। उनका कहना है कि असामान्य व्यवहार व्यक्ति में नहीं बल्कि उसका अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध में विकसीत होता है। समाज या परिवार व्यक्ति को गलत आत्मन् (False Self) विकसीत करने के लिए बाध्य करता है क्योंकि वह अर्थहीन लक्ष्यों (meaningless goal) को प्राप्त करने के लिए बाधित करता है तथा दोहरे किस्म की सूचनाओं (Double message) को देकर व्यक्ति के मन में तथ्यपूर्ण व्यवहार (Authentic behaviour) के प्रति उदासीनता पैदा कर देता है। इन सबों का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति का गलत आत्मन् (Self) सच्चा आत्मन (True Self) को ढँक लेता है और उसका व्यवहार असामान्य हो जाता है। जैसे, लायिंग (Laing, 1979) ने मनोविदलता (Schizophrenia) का कारण देते हुए कहा है कि जब व्यक्ति में अंतर्वैयक्तिक तनाव होता है और साथ-ही-साथ व्यक्ति में जैवरासायनिक कठिनाईयाँ भी होती है, तो व्यक्ति समाज द्वारा निर्मित झूठे या गलत आत्मन् (False-Self) को बरकरार नहीं रख पाता है और वास्तविकता (Reality) से पीछे हटकर वह एक अपना विशेष आंतरिक दुनिया में खो जाता है, जिसे हम मनोविदलता कहते हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अस्तित्ववादी विचारधारा के अनुसार असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति तब होती है जब व्यक्ति अपने आपको स्वीकार करने में, अपने कार्यों का उत्तरदायित्व लेने में, तथा व्यक्तिगत लक्ष्यों (Personals goals) को आगे बढ़ाने में असफल रहता है। End.

Scanned with CamScanner